आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/24-26

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 11 अंक : 5 जनवरी, 2024 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

कुलपति सन्देश

आर्थिक एवं पोषण सुरक्षा हेतु पशु उत्पादों का मूल्य संवर्धन व प्रंसस्करण आवश्यक – कुलपति

वर्तमान में पशुधन उत्पादों का उचित मूल्य और लाभ दिलाने के लिए चहुंओर हर संभव प्रयास किये जा रहे हैं। इसके लिए जैविक पशुधन उत्पाद का मूल्य संवर्धन और उद्यमिता का विकास होना आवश्यक है। भारत देश की 75 प्रतिशत जनसंख्या कृषि व पशुपालन व्यवसाय पर निर्भर है। फल–सब्जियां, अनाज, दुग्ध, मांस तथा अंडा आदि उत्पादन उनकी आय का प्रमुख स्त्रोत है। पिछले कुछ वर्षों से हमारा देश पशु उत्पादों में निरंतर वृद्धि कर रहा है। विश्व के कूल दूध उत्पादन में भारत का लगभग 20–22 प्रतिशत योगदान है तथा मांस उत्पादन में लगभग 4–5 प्रतिशत योगदान है जिसके कारण विश्व के कुल पशुपालन उत्पाद में अहम भूमिका निर्वाह कर रहा है। पशु उत्पादन अत्यधिक पौष्टिक खाद्य पदार्थ है जिससे हमें उच्चतम गुणवत्ता की प्रोटीन, ऊर्जावर्धक वसा तथा शरीर एवं मस्तिष्क के सम्पूर्ण विकास हेतु आवश्यक खनिज लवण व विटामिन संतुलित मात्रा में प्राप्त होते हैं। किन्तु अपने प्राकृतिक रूप में यह उत्पाद सामान्य तापमान पर अत्यधिक तीव्र गति से खराब होने वाले पदार्थ हैं। अतः शीघ्र ही इनका प्रसंस्करण अत्यन्त आवश्यक होता है। वर्तमान परिवेश की व्यस्त जीवन शैली में प्रसंस्कृत खाद्य उत्पादों की मांग दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। किन्तु हमारे देश में संगठित खाद्य उत्पाद सयंत्रों में केवल 15–20 प्रतिशत उत्पादों का ही प्रसंस्करण व मूल्य संवर्धन हो पा रहा है जबकि विकसित देशों में 90–92 प्रतिशत उत्पादों को प्रसंस्कृत करके मूल्य संवर्धन किया जा रहा है। जिसके कारण हमें विदेशों से प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ आयात करने पड़ते हैं। इसका प्रमुख कारण यह भी है कि ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकतम सीमान्त पशुपालक है जो शीत श्रृंखला तथा आधुनिक उपकरणों का खर्च वहन करने में असमर्थ है तथा पशु उत्पाद प्रसंस्करण हेतू संगठित सयंत्रों तक पहुंचाने में असमर्थ है। जिसके कारण पशुपालक पशु उत्पादों को प्राकृतिक व असंशोधित रूप में ही बेच देते हैं जिनके कारण पशुपालकों को उचित लाभ नहीं मिल पा रहा है। भारत व राज्य सरकार भी प्रसंस्करण तथा मूल्य संवर्धन को प्रोत्साहन दे रही है तथा सरकार ने विभिन्न प्रकार की योजनाओं को भी शुरू किया है जिनका उद्देश्य कृषकों तथा पशुपालकों को सशक्त बना कर उनकी आय में वृद्धि करना है। विश्वविद्यालय भी किसानों व पशुपालकों को प्रशिक्षण प्रदान करके उद्यमिता विकास में योगदान दे रहा है। अतः पशुपालक व कृषक भाईयों को इन योजनाओं का लाभ लेना चाहिए तथा स्वदेशी उत्पादों के निर्यात में वृद्धि कर सम्पूर्ण देश को आर्थिक एवं पोषण सुरक्षा प्रदान करने में अपना योगदान देना चाहिए।

प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार गर्ग

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

प्रबंध मण्डल की 33वीं बैठक का आयोजन
एक दशक बाद राजुवास को मिले 48 नए शिक्षक व समकक्ष

वेटरनरी विश्वविद्यालय की 33वीं प्रबंध मण्डल की बैठक बुधवार को कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग की अध्यक्षता में कुलपति सचिवालय में आयोजित की गई। बैठक में प्रबंध मण्डल ने विगत दिनों में हुए विभिन्न साक्षात्कार के परिणामों को घोषित किया। प्रबन्ध मंडल ने कुल 48 सहायक आचार्य, सहायक निदेशक प्रसार, सहायक निदेशक अनुसंधान एवं सहायक लाइब्रेरियन के पदों पर हुए साक्षात्कार के परिणामों का अनुमोदन किया गया। कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा लम्बे समय बाद राज्य सरकार की स्वीकृति उपरान्त रिक्त पदों को भरने के लिए साक्षात्कार घोषित किए गए थे। जिनका परिणाम इस बैठक में घोषित किया गया। जिससे एक दशक बाद विश्वविद्यालय को 48 नए शिक्षक व समकक्ष व्यक्ति मिले है। यह विश्वविद्यालय के लिए गौरव का क्षण है। नवीन पदों की भर्त्ती से विश्वविद्यालय के शिक्षण, अनुसंधान एवं प्रसार कार्यों को गति मिलेगी। बैठक में प्रबंध मण्डल की गत बैठक की पालना रिपोर्ट का अनुमोदन किया गया। विश्वविद्यालय की कुलसचिव बिन्दु खत्री ने बैठक में एजेण्डे प्रस्तुत किये। बैठक में प्रबंध मण्डल के माननीय सदस्य प्रो. ए.के. गहलोत, प्रो. रूद्र प्रताप पाण्डे, डॉ. अमित नैन, प्रो. जे.बी. फोगाट, श्रीमती कृष्णा सोलंकी, अशोक मोदी, पुरखाराम, प्रो. ए.पी. सिंह, प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, प्रो. हेमन्त दाधीच, बी.एल. सर्वा एवं डॉ. एस.एन. पुरोहित ने भाग लिया।

गुणवत्ता युक्त शिक्षा विश्वविद्यालय की प्राथमिकता : कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग

पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर में नवनियुक्त सहायक प्रोफेसरों की मंगलवार को कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने बैठक लेकर इंटरेक्शन किया। कुलपति प्रो. गर्ग ने सभी नवनियुक्त सहायक प्रोफेसरो को बधाई देते हुए गुणवत्ता युक्त शिक्षा, विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु दिशा निर्देश दिए। कुलपति प्रो. गर्ग ने कहा कि पशुचिकित्सा शिक्षा एवं प्रसार का पशुपालकों के आर्थिक उत्थान में अहम् योगदान है। उच्च गुणवत्ता युक्त शिक्षा, अनुसंधान एवं प्रसार के माध्यम से ना केवल हम देश के लिए कुशल मानव संसाधन उपलब्ध करवा सकते है, अपितु उन्नत पशुचिकित्सा एवं कौशल विकास से पशुपालकों को आर्थिक स्वावलम्बी बना सकते है। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बैठक का संचालन किया व नवनियुक्त सहायक प्रोफेसरों का परिचय करवाया। इस अवसर पर निदेशक अनुसंधान प्रो. हेमन्त दाधीच भी उपस्थित रहे।

पशुधन सहायकों ने समझा पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट प्रबन्धन एवं निस्तारण

पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट निस्तारण तकनीकी केंद्र, राजुवास, बीकानेर द्वारा पशुपालन विभाग के बीकानेर जिले के विभिन्न पशु चिकित्सालयों व पशु उपकेन्द्रों पर कार्यरत 30 पशुधन सहायकों का पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के उचित प्रबंधन और निस्तारण विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर 14 दिसम्बर को आयोजित किया गया। प्रशिक्षण उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए डॉ. दीपिका धूड़िया ने कहा कि रोग निदान और उपचार कार्यों में चिकित्सकीय अपशिष्ट का सही निस्तारण मानव और पशु जगत के स्वास्थ्य के लिए अत्यंत आवश्यक है। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने कहा कि हमें बॉयोमेडिकल वेस्ट के उचित निस्तारण के साथ साथ आस पास की स्वच्छता का भी ध्यान रखना चाहिए ताकि मानव व पशुओं को संक्रामक रोगों से बचा सकें। प्रशिक्षण कार्यक्रम में निदेशक एच.आर.डी. प्रो. बी.एन. श्रृंगी ने पशुधन सहायकों को जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट का निस्तारण पूरी जिम्मेदारी के साथ करना चाहिए। उन्होंने कहा कि पशुओं के रोग निदान और उपचार कार्यों में चिकित्सकीय अपशिष्ट का सही निस्तारण से बहुत सी संक्रामक बीमारियों पर काबू पा सकते है, एवं पशुपालकों को आर्थिक नुकसान से बचा सकते है। उपनिदेशक पशुपालन विभाग डॉ. गीता बेनीवाल ने भी प्रशिक्षार्थियों को सम्बोधित किया। केन्द्र के सह–अन्वेषक डॉ. मनोहर सैन एवं डॉ. देवेन्द्र चौधरी ने पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के पृथक्करण व निस्तारण प्रायोगिक विवरण दिया। इस अवसर पर डॉ. निशा अरोड़ा, कार्यालय अतिरिक्त निदेशक पशुपालन विभाग, बीकानेर भी उपस्थित रहीं।

विकसित भारत 2047 के तहत आयोजित होंगे विभिन्न कार्यक्रम

वेटरनरी विश्वविद्यालय में अध्ययनरत सभी विद्यार्थियों को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत 2047 वायस ऑफ यूथ कार्यक्रम के अन्तर्गत अपने सुझाव साझा करने हेतु विभिन्न कार्यों के माध्यम से प्रेरित किया जा रहा है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने बताया कि गत दिनों में राजभवन में राजस्थान के सभी विश्वविद्यालयों के कुलपतियों एवं शिक्षाविदों को माननीय राज्यपाल श्री कलराज मिश्र द्वारा वर्कशॉप के माध्यम से विश्वविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों को प्रधानमंत्री के विकसित भारत कार्यक्रम का हिस्सा बनने एवं अपने सुझावों को प्रेषित करने का संदेश दिया। इसी क्रम में वेटरनरी विश्वविद्यालय के सभी इकाईयों में अध्ययनरत ग्रेजुएट, डिप्लोमा, पी.जी. एवं पीएच.डी. विद्यार्थियों को सशक्त भारत, सस्टेनेबल अर्थव्यवस्था, नवाचार, विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी, सुरक्षा एवं गुड़गर्वनेंस एवं विश्व में भारत विषयों पर अपने विचारों एवं सुझाावों को साझा करने हेतु प्रोत्साहित किया जा रहा है। आगामी दिनों में विश्वविद्यालय वर्कशॉप, समूह चर्चा पोस्टर, स्लोगन, व्याख्यान के माध्यम से भी विद्यार्थियों को वॉइस ऑफ इंडिया का प्रतिभागी बनाने हेतु प्रोत्साहित किया जायेगा। कुलपति प्रो. गर्ग ने कहा कि युवा ही देश का भविष्य है। अतः हम युवा पीढ़ी को सशक्त बनाकर ही विकसित भारत का सपना देख सकते हैं। अधिष्ठाता वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर प्रो. ए.पी. सिंह ने सभी विभागाध्यक्षों की बैठक आयोजित कर उनके द्वारा विद्यार्थियों विकसित भारत पर अपने विचार साझा करने के लिए प्रेरित करने के लिए निर्देशित किया।

पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट प्रबन्धन पर प्रशिक्षण

श्रीगंगानगर एवं हनुमानगढ़ जिले के पशुधन सहायक हुए प्रशिक्षित

पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट निस्तारण तकनीकी केंद्र, राजुवास, बीकानेर द्वारा पशुपालन विभाग बीकानेर संभाग के हनुमानगढ़ और श्रीगंगानगर जिले के विभिन्न पशु चिकित्सालयों व पशु उपकेन्द्रों पर कार्यरत 30 पशुधन सहायकों का पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के उचित प्रबंधन और निस्तारण विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर 22 दिसम्बर को आयोजित किया गया। प्रशिक्षण उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए डॉ. दीपिका धूड़िया ने कहा कि रोग निदान और उपचार कार्यों में चिकित्सकीय अपशिष्ट का सही निस्तारण मानव और पशु जगत के स्वास्थ्य के लिए अत्यंत आवश्यक है। समारोह के मुख्य अतिथि निदेशक अनुसंधान प्रो. हेमंत दाधीच ने संक्रामक रोगों से बचाव की जानकारी दी एवं निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, संयुक्त निदेशक पशुपालन हनुमानगढ़ डॉ. शुचिस्मिता चटर्जी एवं निदेशक क्लिनिक्स प्रो. प्रवीण बिश्नोई ने भी प्रशिक्षणार्थियों को भी संबोधित किया। केन्द्र के सह–अन्वेषक डॉ. मनोहर सैन ने पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के उचित प्रबंधन एवं निस्तारण विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किए। डॉ. देवेन्द्र चौधरी ने पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के पृथक्करण व निस्तारण प्रायोगिक विवरण दिया।

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी

गाढ़वाला में पशुओं में टीकाकरण जागरूकता शिविर

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पॉंसिबिलिटी के अंतर्गत गोद लिये गये गॉव गाढ़वाला में 16 दिसम्बर को अखिल भारतीय मारवाडी बकरी नस्ल सुधार परियोजना द्वारा एक दिवसीय टीकाकरण जागरुकता शिविर का आयोजन किया गया। परियोजना की प्रमुख अन्वेषक प्रो. उर्मिला पानू ने बताया कि शिविर के दौरान 35 पशुपालकों को खनिज लवण व बाह्य–परजीवी नाशक दवा का वितरण किया गया तथा बकरियों में पॉक्स का टीका भी लगाया गया। पशुपालकों को पशुओं में होने वाली विभिन्न बीमारियो एवं उनसे संबंधित टीकाकरण के बारे में विस्तार से समझाया गया। शिविर का आयोजन परियोजना के सह–प्रमुख अन्वेषक डॉ विरेन्द्र कुमार के निर्देशन में किया गया। शिविर के आयोजन में डॉ प्रकाश, महावीर, श्यामलाल व मोहम्मद नसीम का सहयोग रहा।

गाढ़वाला में चिकित्सा शिविर

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा यूनिवर्सिटी–सोशल रिस्पोंसिबिलिटी के तहत गोद लिए गांव गाढ़वाला में शुक्रवार को चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि शिविर में रक्तदाब, मधुमेह व अन्य सामान्य जांचों के साथ–साथ खांसी–जुकाम, बुखार, जोडों के दर्द सहित विभिन्न मौसमी बीमारियों का उपचार किया गया एवं दवाईयां वितरण की गई। शिविर प्रभारी डॉ. भूमिका सांखला के नेतृत्व में शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें ग्राम वासियों ने सक्रिय भागीदारी निभाई। शिविर के दौरान सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी मोनिका शर्मा, ए.एन.एम. लवली टी., मनोज कुमार, डॉ. संजय सिंह, डॉ. अभिषेक मीणा का भी सहयोग रहा।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू) द्वारा 4, 11, 16, 18, 23 एवं 26 दिसम्बर को गांव कालरी, तोलासर, लासेरी, साहवा, एवं भाटवाला गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया तथा 05 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 193 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 4 एवं 7 दिसम्बर को ऑनलाईन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण एवं 8 दिसम्बर को गांव बावराला गांव में आयोजित पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 78 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा दिनांक 18, 19, 21, 22 एवं 26 दिसम्बर को गांव मेडाचोली, सीही, सरसई, नगला गुर्जर एवं नगला बघेरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 90 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 5, 11, 16, 20 एवं 22 दिसम्बर को गांव सामौर, समोला, जाटोली, कठुमार एवं बादलपुर गांवों में तथा दिनांक 28 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में कुल 180 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 08, एवं 11 दिसम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर तथा दिनांक 12 व 26 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण और 22 दिसम्बर को गांव सुरनानो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 163 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा 5, 7, 15 एवं 18 दिसम्बर को गांव गोयली, बरली, जावाल एवं ऊड गांवो में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 87 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर द्वारा 1, 4, 11, 16, 23 एवं 29 दिसम्बर को गांव घसेडी, जौधवारा, थोर, धासना, भरौरी एवं डोरडा गांवों में एक दिवसीय एवं 18 दिसम्बर को आयोजित एक दिवसीय ऑन लाईन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 165 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 5, 8, 12, 20 एवं 22 दिसम्बर को गांव ढ़ाबा, गांवड़ी, ताथेड़, मुण्डला एवं भदाना गांवों में तथा दिनांक 21 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 142 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 12, 16, 19 एवं 27 दिसम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण एवं 8 व 23 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का अयोजन किया गया। इन शिविरों में 179 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 4, 6, 8, 11, 13 एवं 15 दिसम्बर को गांव सरथूना, धमोद, लेहना, चौताश, झलाई एवं देवगांव गांवों में तथा दिनांक 19 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 174 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 7, 13 एवं 16 दिसम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन एवं 11, 18 एवं 26 दिसम्बर को गांव डूमगरा, कैरू और कसेरू गांवों में तथा दिनांक 2, 4 व 12 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों से 161 पशुपालक लाभान्वित हुए।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा (चित्तौडगढ़) द्वारा 2, 4 एवं 18 दिसम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 72 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर (जयपुर) द्वारा 06,08,12,15,16,27 एवं 29 दिसम्बर को गांव हतोज, माचया जयपुर, राजारामपुरा, खेड़ी, बंशीपुरा जोबनेर, हडौता एवं भोजपुरा रेनवाल गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 133 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर) द्वारा 8, 11, 12, 23, 26, 27, एवं 30 दिसम्बर को गांव बल्दू, गेनाणा, दूधोली, रताऊ, दुरीला, मामरोदा एवं बेड गांवों में तथा दिनांक 21, 28 एवं 29 दिसमबर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 212 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोजावर-पाली

पशु विज्ञान केन्द्र, जोजावर (पाली) द्वारा 6 एवं 26 दिसम्बर को गांव संभागिया एवं जोधकिया–2 गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 23 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 5–8, 11–14, 16–19 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में चार दिवसीय तथा 9 व 23 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय व 4, 6 एवं 21 दिसम्बर को गांव भैरूसरी, एडी ऑफिस, फैफना में कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 237 पशुपालक व कृषकों ने भाग लिया।

दुधारू पशुओं में थनैला रोग

दुधारू पशुओं में थनैला रोग एक संक्रामक रोग है। पशुओं के अनुचित प्रबंधन, साफ सफाई नहीं रखना और दूध निकालने का गलत तरीका इस रोग का मुख्य कारण है। पशुओं के दुग्ध ग्रंथियों में संक्रमण होने से थनों में सूजन, दर्द , पशु का खाना पीना छोड़ देना, तापमान बढ़ना और दूध की गुणवता (स्वाद, पी.एच, गंध, रंग) बदल जाना जैसे लक्षण प्रकट होते हैं परंतु कई बार पशु में इस प्रकार के लक्षण प्रकट नहीं होते और पशु के दूध का उत्पादन धीरे धीरे कम होने लगता है इसे सबक्लिनिकल मैस्टाइटिस कहते हैं जो ज्यादा खतरनाक होता है जिसमें पशुपालकों को और दूध सेवन करने वाले मनुष्यों को संक्रमण तथा आर्थिक नुकसान की हानि उठानी पड़ती है और कई बार पशुपालकों में मैस्टाइटिस रोग के बारे में जानकारी नहीं होने के कारण यह लंबे समय तक रहने से थनों में कड़ापन या फाइब्रोसिस हो जाता है और पशुओं के थन हमेशा के लिए बंद हो जाते हैं इसे क्रॉनिक मैस्टाइटिस कहते हैं।

थनैला रोग के होने के कई कारण हैं जैसेरू जीवाणु, वायरस, फफूंद, माइकोप्लाजमा इत्यादि, मुख्यतः हमारे क्षेत्रों में स्टेफाईलोकोकस, स्ट्रैप्टोकोकस और ई–कोलाई जैसे बैक्टीरिया के कारण पशुओं में मैस्टाइटिस रोग होता है। ये जीवाणु दूध के मार्ग के जरिए थनों में प्रवेश करते है जब पशु नीचे बैठता है तो गंदगी के संपर्क में आने के कारण जीवाणु थन के जरिए अंदर तक पहुंचते हैं और वहां दूध बनाने वाले ग्रंथियों की कार्यप्रणाली को प्रभावित करते हैं जिससे अंदर की कोशिकाएं नष्ट हो जाती है तथा बाद में इन ग्रंथियों में फाइब्रोसिस होने के कारण कठोर हो जाती हैं और अंत में दूध बनना बंद हो जाता है ु कभी–कभी पशु को हल्का बुखार, दूध निकालते समय पशु को दर्द और दूध में कभी खून या कभी दूध फटा दही जैसा निकलता है। यह इंफेक्शन एक थन में या सभी थनों में भी हो सकता है इसलिए उचित समय पर पशु चिकित्सक से पशु का इलाज करवाएं जिससे पशु तथा उसके दूध को सेवन करने वाले मनुष्यों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले हानिकारक प्रभाव से बचा जा सके।

थनैला रोग से बचाव के लिए कुछ सावधानियां रखी जा सकती है जैसे– दूध निकालने से पहले अपने हाथ अच्छी तरह साफ पानी व साबुन से धोएं, पशु के थनों को साफ पानी व लाल

दवा से धोकर साफ करना, दूध निकालने के बाद पशु को आधे घंटे तक नीचे नहीं बैठने देना, दूध निकालने के बाद भी पशु के थनों को साफ पानी या लाल दवा से धोकर साफ करना और थन में किसी प्रकार की चोट व घाव है तो उसका तुरंत पशु चिकित्सक से इलाज करवाना चाहिए और यदि किसी पशु को थनैला रोग हो जाता है तो उसका दूध सबसे अंत में निकालें और अन्य पशुओं से अलग रखें ताकि संक्रमण दूसरे पशुओं के थनों में ना फैले ।

प्रयोगशाला निदान के तौर पर पशुपालक थनैला रोग के लक्षण दिखाई देने पर या पशु के दूध में कोई भी बदलाव जैसे स्वाद, पी.एच, गंध, रंग जैसे बदलाव आए तो तुरंत नजदीकी पशु चिकित्सक से सलाह ले तथा नजदीकी प्रयोगशाला से थनैला रोग की जाँच करवानी चाहिए। दूध के लिए मुख्य टेस्ट दूध का पी.एच. पेपर टेस्ट, कैलिफोर्निया मैस्टाइटिस टेस्ट और मिल्क कल्चर सेंसटिविटी टेस्ट पशुपालक करवा सकते हैं। पशु को थनैला रोग हो जाने के बाद जब तक पशु पूरी तरह स्वस्थ नहीं हो जाए तब तक हमें बीमार पशु के दूध का सेवन नहीं करना चाहिए। पशुओं को जिस बाड़े में रखा जाता है उसकी साफ–सफाई तथा दूध निकालने वाले बर्तन बाल्टी को अच्छी तरह साबुन/सर्फ से धोकर उन्हें सुखाकर काम में लें और दूध निकालने के लिए 'फुल हैंड मिलकिंग मेथड' अपनाने की कोशिश करें। इन सभी सावधानियो को ध्यान मे रखकर पशुओं को थनैला रोग से बचाया जा सकता हैं और दूध में आने वाले संक्रमण से मानव स्वास्थ्य पर पड़ने वाले हानिकारक प्रभावों को कम किया जा सकता हैं।

डॉ. हेमन्त कुमार, डॉ. प्रवीन बानो एवं डॉ. अमित कुमार
पशु विज्ञान केन्द्र, लूणकरनसर

अपने श्वान को पारवो वायरस इन्फेक्शन से बचाएं

कैनाइन पारवो वायरस संक्रमण श्वानों में होने वाला अत्यधिक खतरनाक व जानलेवा संक्रमण है जो कि कैनाइन पारवो वायरस टापइ 2 (CPV-2) के कारण होता है। यह वायरस श्वानों के श्वेत रक्त कोशिकाओं और जठरांत्र संबंधी मार्ग पर हमला करता है इसके अलावा पिल्लों में यह वायरस हृदय की मांसपेशियों को भी नुकसान पहुंचा सकता है। कैनाइन पारवोवायरस संक्रमण 6 से 20 सप्ताह की उम्र के बीच के पिल्ले, बिना टीकाकरण या अपूर्ण टीकाकारण वाले श्वानों में ज्यादा होता है। श्वानों की कुछ नस्लें इस संक्रमण के प्रति ज्यादा संवेदनशील होती है जो कि निम्नलिखित है –

- ❖ रॉटवीलर
- ❖ डोबर्मन पिसंर्स
- ❖ बुल टेरियर
- ❖ जर्मन शैफर्ड
- ❖ अंग्रेजी स्प्रिंगर स्पैनियल

कैनाइन पारवो वायरस संक्रमण संक्रमित श्वानों के सीधे सम्पर्क में आने, संक्रमित श्वानों के मल के संम्पर्क में आने व वायरस दूषित सतहों के सम्पर्क में आने से आसानी से फैलता है। यह वायरस सर्दी, गर्मी, नमी व शुष्कता के प्रति प्रतिरोधी है और लंबे समय तक पर्यावरण में जीवित रह सकता है यहां तक कि संक्रमित श्वान के मल की थोड़ी मात्रा में भी वायरस हो सकता है और अन्य श्वानों को संक्रमित कर सकता है। इसके अलावा यह वायरस संदुषित सतहों जैसे भोजन व पानी के बर्तनों, विश्राम की जगहों, कपड़ों आदि से भी फैल सकता है।

लक्षण :– पारवो वायरस संक्रमण के लक्षण संक्रमण की गंभीरता के आधार पर श्वान–दर–श्वान में अलग–अलग होते हैं जैसे :–

- ❖ सुस्त रहना
- ❖ बुखार आना
- ❖ भूख में कमी
- ❖ उल्टी करना
- ❖ खूनी दस्त एवं
- ❖ पेट में दर्द व सूजन आना आदि के लक्षण दिखाई देते है।

लगातार उल्टी व दस्त होने की वजह से श्वान के शरीर में निर्जलीकरण हो सकता है और आंतों व प्रतिरक्षा प्रणाली को

नुकसान होने से सेप्टिक शॉक हो सकता है इससे श्वान की मृत्यु भी हो सकती है। अंधिकांश श्वानों में लक्षण प्रकट होने के 48–72 घंटों के भीतर भी मृत्यु हो जाती है, पिल्लों में संक्रमण हृदय की मांसपेशियों तक पहुंचने पर घातक हो जाता है।

उपचार :–

- ❖ संक्रमित श्वान के इलाज के लिए लक्षण प्रकट होने के तुरंत बाद पशुचिकित्सक की सलाह लेकर उसका इलाज करवाएं। इस विषाणु को खत्म करने के लिए कोई सुनिश्चित इलाज नहीं है। श्वानों में लक्षणों के आधार पर इस संक्रमण का इलाज किया जाता है।
- ❖ शारीरिक द्रव्य तथा लवणों के नुकसान की भरपाई हेतु बाहर से लवण व द्रव्य दिये जाने चाहिए।
- ❖ रक्तस्त्रावी जठरांत्र शोथ के उपचार हेतू ब्रॉड स्पेक्ट्रम एंटीबायोटिक व लक्षण आधारित उपचार अतिशीघ्र करवायें तथा उल्टियां रोकने हेतू उपचार देंवे। यदि श्वान लगातार उल्टियां कर रहा है तो कम से कम 24 घंटे तक उसे कुछ ना खिलाएं पिलाएं तथा तुरन्त पशुचिकित्सक को दिखा कर उचित इलाज करवाएं।

रोकथाम :–

- ❖ संक्रमित श्वान को स्वस्थ श्वानों से अलग रखें तथा आवास स्थल की स्वच्छता का पूरा ध्यान रखें।
- ❖ श्वानों के मल–मूत्र तथा अन्य शरीरिक विसर्जनों का उचित रूप से निस्तारण करें।
- ❖ टीकाकरण उचित समय पर पशुचिकित्सक की सलाह पर अति आवश्यक रूप से करवाएं।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सफलता की कहानी

पशुपालन से साल में बारह लाख की आमदनी होती है हरिशंकर को

श्री हरिशंकर शर्मा, ग्राम–गांवड़ी, तहसील–लाडपुरा जिला–कोटा के प्रगतिशील पशुपालक ने तीन वर्ष पूर्व पशुपालन व्यवसाय की शुरूआत की थी। इन्होंने दसवीं तक शिक्षा ग्रहण की हुई है। इनके पास 45 बीघा कृषि भूमि है शुरूआत में इनके पास 10 पशु थे। वर्तमान मे पशुपालन व्यवसाय को वृहद् स्तर पर अपनाते हुए कुल 53 पशुओं के साथ पशुपालन को एक सफल व्यवसाय के रूप मे आगे बढ़ा रहे है। इनके पास 30 मुर्रा नस्ल की भैंसें और 08 जर्सी क्रास गायें हैं एंव 15 छोटे वत्स है। प्रतिदिन लगभग 220 लीटर दुग्ध उत्पादन होता है। डेयरी व्यवसाय से वार्षिक आय लगभग बारह लाख रूपये तक हो जाती है। साथ ही इन्होने चार लोगो को रोजगार भी दिया हुआ है। पशुओं के लिए पक्की पशुशाला भी बना रखी है जिसमें टीनशेड व पंखो की सुविधा भी उपलब्ध है। पशुओं के लिए हरा चारा वर्ष भर सामान्यतः उपलब्ध रहता है एंव चारा कुटट्री करने हेतु बिजली चलित चॉफ कटर का उपयोग करते है। इन्होने मुर्रा नस्ल का उन्नत पाडा भी रखा है जो गुजरात से लाये थे एंव उन्नत नस्ल के लिए कृत्रिम गर्भाधान तकनीक को भी अपनाते है। पशुओं में होने वाली संक्रमाक बीमारियों से अपने पशुओं को बचाने के लिए हर छह माह मे टीकाकरण भी करवाते है। प्राथमिक पशुचिकित्सा हेतु वेटरनरी फर्स्ट एड बॉक्स भी रखते है और जिनका उपयोग पशुचिकित्सक की सलाह से स्वंय कर लेते है एंव आवश्यक होने पर पशुचिकित्सक की सेवाएँ भी लेते है। पशु विज्ञान केंद्र, कोटा द्वारा गांवड़ी गांव मे पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन एवं विभिन्न प्रसार गतिविधियों मे इन्होंने भागीदारी निभाई है। ये कृमिनाशक दवा, खनिज लवण मिश्रण, टीकाकरण, पशुओं में नस्ल सुधार हेतु कृत्रिम गर्भाधान तकनीक एंव संतुलित पशु आहार आदि को पशुओं के लिए उपयोग मे लेते है। ये पशुधन उत्पादन की

विभिन्न उन्नत तकनीकों जैसे यूरिया उपचारित भूसा, अजोला, यूरिया मोलासेस मिनरल ब्लॉक, स्व निर्मित संतुलित पशु आहार आदि को भी अपनाने की इच्छा रखते है एवं केन्द्र द्वारा इनसे संबंधित जानकारी उपलब्ध करवायी जाती है। अपने पशुओ द्वारा उत्पादित दूध आसपास के क्षेत्र के निवासियों को सप्लाई करने वाले को देते है। पशुपालन को अपनाने से आर्थिक रूप से सुदृढ होने के साथ–साथ आत्मनिर्भरता का जीवन जी रहे है एंव निकट भविष्य मे इसे और भी वृहद् स्तर पर व्यवसायिक रूप से अपनाने की इच्छा रखते है। श्री हरिशंकर शर्मा अपनी सफलता का श्रेय अपने परिवार के सदस्यों के साथ–साथ पशु विज्ञान केंद्र, कोटा को भी देते है।

सम्पर्क- हरिशंकर शर्मा पुत्र श्री रामनारायण शर्मा
ग्राम-गांवड़ी, तहसील-लाडपुरा, जिला-कोटा, मो. : 9413185140

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–जनवरी, 2024

पशु रोग	पशु	अत्यधिक संभावना	अधिक संभावना	मध्यम संभावना	बहुत कम संभावना
ब्लू टंग रोग	भेड़	–	–	–	अलवर, बाड़मेर, बीकानेर, बूंदी, जोधपुर, जैसलमेर, प्रतापगढ़, सिरोही
बेबेसिओसिस	गाय, भैंस	–	–	–	अजमेर, अलवर, बीकानेर, बूंदी, चूरू, दौसा, डूंगरपुर, गंगानगर, जयपुर, झुंझुनू,
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	–	–	दौसा	अलवर, भरतपुर, बीकानेर, कोटा
खुरपका मुंहपका रोग	गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊंट	दौसा, जयपुर	अलवर, गंगानगर	जोधपुर	अजमेर, भीलवाड़ा, बारां, बाड़मेर, भरतपुर, बीकानेर, बूंदी, चित्तौड़गढ़, चूरू, धोलपुर, डूंगरपुर, हनुमानगढ़, जालोर, झालावाड़, झुंझुनू, कोटा, नागौर, पाली, राजसमन्द, सिरोही, टोंक
गलघोंटू रोग	गाय, भैंस,	पाली, करौली	दौसा	–	अलवर, बारां, बाड़मेर, भीलवाड़ा, बीकानेर, बूंदी, डूंगरपुर, जयपुर, झुंझुनू, जोधपुर, नागौर, राजसमन्द, सवाई–माधोपुर, सीकर, उदयपुर
पी.पी.आर.	भेड़, बकरी	चूरू, झुंझुनू	–	–	बरां, बाड़मेर, भीलवाड़ा, भरतपुर, बीकानेर, बूंदी, चित्तौड़गढ़, दौसा, गंगानगर, हनुमानगढ़, झालावाड़, झुंझुनू, जोधपुर, कोटा, पाली, प्रतापगढ़, सिरोही, टोंक, उदयपुर
माता रोग	भेड़, बकरी	चूरू, झुंझुनू	–	–	–
स्वाइन फीवर	सूअर	जयपुर	–	–	भरतपुर, बूंदी, चित्तौड़गढ़
थीलेरिओसिस	गाय के बछड़े	–	–	–	जयपुर, प्रतापगढ़
बी.क्यू.	गाय	–	–	–	बीकानेर

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. ए.पी. सिंह, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर एवं
डॉ. जे.पी. कछावा, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर। फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183, टोल फ्री नम्बर 18001806224

प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर

निदेशक की कलम से...

दुधारू पशुओं के चयन में पशुपालक रखे सावधानियां

पशुपालन किसानों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने का सबसे अच्छा विकल्प है। पशुपालन एक ऐसा कृषि व्यवसाय है जिसे भूमिहीन व सीमान्त पशुपालक व किसान भी कर सकते हैं। पशुपालन व डेयरी व्यवसाय में दुधारू पशुओं के दूध देने की क्षमता का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है अतः पशुओं की खरीददारी करते समय कुछ विशेष जानकारियों का होना आवश्यक हो जाता है। पशुओं के अच्छे गुणों पर ही डेयरी व्यवसाय का भविष्य निर्भर करता है। क्योंकि अच्छी नस्ल व उच्च गुणवत्ता के दुधारू पशुओं से ही अधिक दूध प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए पशु का चयन एवं खरीददारी करते समय अच्छी नस्ल, दोष रहित स्वास्थय, लम्बे ब्यांत, हर साल बच्चा और अधिक दूध देने वाले पशुओं को प्राथमिकता देनी चाहिए। आमतौर पर किसान व पशुपालक भाई पशु खरीदते समय धोखाधड़ी का शिकार हो जाते हैं। क्योंकि बेचने वाला कई बार पशु के अवगुणों को छुपा लेता है। अतः पशुपालक भाई दुधारू गाय–भैंस खरीदते समय तिकोने आकार की गाय को प्राथमिकता के साथ खरीदें। इसमें गाय–भैंस का अगला हिस्सा पतला व पिछला हिस्सा चौड़ा होना चाहिए। शरीर की तुलना में पैर–मुंह अथवा सिर के बाल छोटे होने चाहिए। अयन पूर्ण विकसित व बड़े होने चाहिए तथा थनों व अयन पर पाई जाने वाली दुग्ध शिराएं उभरी हुई व टेड़ी–मेढ़ी होनी चाहिए। दुधारू पशु को खरीदते समय दूसरे या तीसरे ब्यांत वाले वंश को प्राथमिकता देनी चाहिए क्योंकि इस दौरान दुधारू पशु पूर्ण क्षमता के साथ दूध देना शुरू कर देते हैं तथा यह क्रम सातवें ब्यांत तक चलता है। पशु खरीदते समय यह भी प्रयास होना चाहिए कि गाय–भैंस एक महिने की ब्यांही हुई हो तथा उसके साथ मादा बच्चा हो। खरीदने से पहले दुधारू पशु का तीन बार दूध दोहन कर देख लेना चाहिए। पशु को चलाते समय उसके पिछले खुर (पैर) अगले खुरों के निशान पर आने चाहिए। पशु खरीदते समय उसकी सही आयु का पता उसके दांतों अथवा सींग पर बनी हुई वलयों के आधार पर करके ही पशु को खरीदे। अतः पशुपालक भाई पशु खरीदते समय विशेष सावधानी रखें ताकि आर्थिक नुकसान से बचा जा सके।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

''धीणे री बात्यां''

पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम

माह के तीसरे गुरुवार को

सायं 5.30 से 6.00 बजे तक

प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए

टोल फ्री हैल्पलाईन

1800 180 6224

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया

।। पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम् ।।

सभी पशुपालक, किसान भाईयों एवं पशुपालन नये आयाम के सभी पाठकों को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं।